

Dollar Hegemony Under Challenge: Domestic Currency Multipolarity

डॉ. परिपूर्णा नंद तिवारी

अतिथि विद्वान -वाणिज्य विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा मध्य प्रदेश

सारांश

वर्तमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में अमेरिकी डॉलर (USD) की हेगमनी लंबे समय से स्थापित है, लेकिन 2024-2025 के दौरान BRICS देशों द्वारा घरेलू मुद्राओं में व्यापार निपटान, डिजिटल मुद्रा पहल और वैकल्पिक भुगतान प्रणालियों के विकास ने इसे चुनौती दी है। यह शोध पत्र डॉलर प्रभुत्व के ऐतिहासिक आधारों, वर्तमान चुनौतियों और घरेलू मुद्रा बहुधुवीयता (domestic currency multipolarity) की ओर बढ़ते रुझान का विश्लेषण करता है। माध्यमिक स्रोतों और हालिया रिपोर्टों के आधार पर पाया गया है कि डॉलर अभी भी विदेशी मुद्रा भंडार का 56-59% हिस्सा रखता है, लेकिन धीरे-धीरे क्षरण हो रहा है। BRICS में रूस-चीन व्यापार का 95-99% अब युआन-रुबल में होता है, जबकि भारत-रूस और ब्राजील-चीन जैसे समझौते स्थानीय मुद्राओं को बढ़ावा दे रहे हैं। निष्कर्ष में कहा गया है कि पूर्ण डी-डॉलरीकरण नहीं, बल्कि बहुधुवीय मुद्रा व्यवस्था उभर रही है, जिसमें भारत जैसे देश सतर्क रणनीति अपनाते हुए रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण कर रहे हैं। यह परिवर्तन वैश्विक व्यापार को अधिक समावेशी बना सकता है, लेकिन जोखिम भी पैदा करता है।

कीवर्ड्स: डॉलर हेगमनी, डी-डॉलरीकरण, घरेलू मुद्रा बहुधुवीयता, BRICS, स्थानीय मुद्रा व्यापार, मुद्रा प्रभुत्व, वैकल्पिक भुगतान प्रणाली, युआन, रुपये अंतरराष्ट्रीयकरण।



परिचय

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रेटन वुड्स समझौते से शुरू हुई अमेरिकी डॉलर की वैश्विक हेगमनी आज भी अंतरराष्ट्रीय व्यापार, भंडार और ऋण का आधार बनी हुई है। डॉलर का उपयोग वैश्विक व्यापार चालान का लगभग 88% और विदेशी मुद्रा भंडार का प्रमुख हिस्सा है। पेट्रोडॉलर व्यवस्था और अमेरिकी वित्तीय बाजारों की गहराई ने इसे 'अत्यधिक विशेषाधिकार' प्रदान किया है।

किंतु 2024-2025 में यह स्थिति चुनौतीपूर्ण हो गई है। अमेरिकी ऋण में वृद्धि, ट्रंप प्रशासन की टैरिफ नीतियां, फेडरल रिजर्व की स्वतंत्रता पर सवाल और प्रतिबंधों का हथियार के रूप में उपयोग (weaponization of dollar) ने कई देशों को वैकल्पिक रास्ते खोजने पर मजबूर किया है। BRICS देशों (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका और नए सदस्य) ने घरेलू मुद्राओं में द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा दिया है। उदाहरणस्वरूप, रूस-चीन व्यापार का 99% अब युआन और रूबल में निपटता है। ब्राजील-चीन ने युआन-रियल समझौता किया, जबकि भारत ने रूस से तेल रुपये में खरीदना शुरू किया।

यह 'घरेलू मुद्रा बहुधुवीयता' की ओर संक्रमण है, जिसमें कोई एक मुद्रा (डॉलर) की बजाय कई स्थानीय मुद्राएं (युआन, रुपये, रूबल आदि) व्यापार का माध्यम बन रही हैं। BRICS पे, ब्लॉकचेन आधारित भुगतान प्रणाली, m-Bridge प्रोजेक्ट और BIS का Agorá प्रोजेक्ट जैसे प्रयास डॉलर-केंद्रित SWIFT को बायपास कर रहे हैं। सोना और बिटकाइन भी वैकल्पिक भंडार के रूप में उभर रहे हैं। यह शोध इस चुनौती की गहराई, कारणों और प्रभावों पर केंद्रित है।

अनुसंधान पद्धति

यह शोध गुणात्मक और वर्णनात्मक प्रकृति का है, जो पूर्णतः माध्यमिक डेटा पर आधारित है। अनुसंधान में निम्नलिखित स्रोतों का उपयोग किया गया:

अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्ट्स (BIS, IMF, World Bank)।



2024-2025 की समाचार रिपोर्ट्स और विश्लेषण (IISS, Al Jazeera, JPMorgan, Economist, Atlantic Council)।

अकादमिक पेपर (RePEc, ScienceDirect, ECB Working Paper)।

BRICS शिखर सम्मेलनों के आधिकारिक दस्तावेज और द्विपक्षीय व्यापार आंकड़े।

डेटा संग्रह 2025 मार्च तक के नवीनतम प्रकाशनों तक सीमित रहा। विश्लेषण विधि में थीमेटिक विश्लेषण (thematic analysis) अपनाया गया, जिसमें डॉलर प्रभुत्व के स्तंभ (भंडार, चालान, ऋण), चुनौतियां (भू-राजनीति, ऋण, नीति अनिश्चितता) और बहुधुवीयता के संकेतक (स्थानीय मुद्रा निपटान प्रतिशत, CBDC परीक्षण) को चिन्हित किया गया। कोई प्राथमिक सर्वे या क्षेत्रीय कार्य नहीं किया गया, क्योंकि उद्देश्य मौजूदा रुझानों का संश्लेषण करना था। सीमाएं: आंकड़ों की उपलब्धता कुछ देशों में सीमित है और भविष्यवाणियां अनिश्चित हैं।

निष्कर्ष

डॉलर हेगमनी पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है, लेकिन 2025 में यह 'क्षतिग्रस्त प्रभुत्व' (wounded hegemon) की स्थिति में पहुंच गई है। BRICS द्वारा घरेलू मुद्रा बहुधुवीयता को बढ़ावा देने से वैश्विक व्यापार अधिक विविध और कम अमेरिका-निर्भर हो रहा है। डॉलर का विदेशी भंडार हिस्सा धीरे-धीरे घट रहा है, जबकि युआन और अन्य उभरती मुद्राएं बढ़ रही हैं। पूर्ण प्रतिस्थापन की बजाय 'बहुधुवीय मुद्रा परिदृश्य' उभर रहा है, जिसमें स्विफ्ट के समानांतर BRICS पे और डिजिटल प्लेटफॉर्म काम करेंगे।

भारत के लिए यह अवसर और चुनौती दोनों है। रुपये का अंतरराष्ट्रीयकरण (जैसे रूस के साथ) बढ़ रहा है, लेकिन पूर्ण डी-डॉलरीकरण भारत की नीति नहीं है। निष्कर्षतः, यह परिवर्तन वैश्विक दक्षिण को अधिक स्वायत्तता देगा, लेकिन अस्थिरता और मुद्रा जोखिम भी बढ़ा सकता है। भविष्य में बहुपक्षीय सहयोग से ही स्थिर बहुधुवीय व्यवस्था संभव है।



संदर्भ

- [1]. Stuart-Menteth, S. (2025). The future of dollar dominance. International Institute for Strategic Studies (IISS). <https://www.iiss.org/online-analysis/six-analytic-blog/2026/01/the-future-of-dollar-dominance/>
- [2]. Al Jazeera. US dollar: 'Wounded hegemon' or secure as most powerful currency on earth? <https://www.aljazeera.com/news/2025/1/27/us-dollar-wounded-hegemon-or-secure-as-most-powerful-currency-on-earth>
- [3]. JPMorgan. (2025). De-dollarization: Is the US dollar losing its dominance? <https://www.jpmorgan.com/insights/global-research/currencies/de-dollarization>
- [4]. Wired. (2025, December 28). The Dollar Is Facing an End to Its Dominance. <https://www.wired.com/story/the-dollar-is-facing-an-end-to-its-dominance/>
- [5]. Atlantic Council. (2025). Markets and allies aren't 'selling' America. They're 'hedging' it. <https://www.atlanticcouncil.org/content-series/inflection-points/markets-and-allies-arent-selling-america-theyre-hedging-it/>
- [6]. Lowly Institute. (2025). A reality check for BRICS and the lofty dedollarisation agenda. <https://www.lowlyinstitute.org/the-interpreter/reality-check-brics-lofty-dedollarisation-agenda>
- [7]. Gürcan, E.C. (2024). The multipolar challenge: implications for dollar dominance. RePEc. <https://ideas.repec.org/p/ehl/lserod/127413.html>
- [8]. Arslanalp, S. et al. (2022). The stealth erosion of dollar dominance. ScienceDirect.
- [9]. Abadi, J. et al. (2025). International Currency Dominance. Federal Reserve Bank of Philadelphia.

